ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 58-61
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

चीनी उद्योग में प्रबन्ध तथा सहसभागिता के प्रति दृष्टिकोण

(सठियांव चीनी मिल के अनुसूचित जातीय श्रमिकों का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन)

सर्वजीत मौर्य

असि0 प्रोफे– समाजशास्त्र विभाग, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महेन्द्र पी0जी0 कालेज, हलधरपुर, मऊ, (उ0प्र0) भारत

Received- 02 .11. 2018, Revised- 08 .11. 2018, Accepted - 13.11.2018 E-mail:kumar05091978@gmail.com

सारांश–प्रस्तुत शोधपत्र सठियांव चीनी मिल के 100 अनुसूचित जाति के श्रमिकों के जीवन पर आधारित है। मिल परिवेश से प्राप्त सुविधाओं के प्रति सहभागिता एवं प्रबन्धक व्यवहार प्रमुख केन्द्र बिन्दु है। जाति शिक्षा एवं आयु का प्रबन्ध से गहरा सम्बन्ध है। इस प्रकार इस अध्ययन में पाया गया है। कि जिन श्रमिकों को सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिंक सुविधायें प्राप्त है, वे कार्य के प्रति रुचि व्यक्त करते है।

अनुसूचित जातियां समाज के निम्नवत् स्तर की जातियां है। सामाजिक संस्तरण में निम्नस्तर का होने के कारण सामाजिक जीवन के अवसरों मे इनकी सहभागिता का स्तर भी निम्न रहा है। उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जातियों की सख्या 66 से अधिक तथा प्रतिशत 21 से भी अधिक है। सदियों से दमित एवं पिछड़ी हुयी इन जातियों में निरन्तर अनेक स्वरुपों में प्रचालित मान्यताओं एवं दृष्टिकोणों के विरुद्ध अपना विरोध प्रदर्शित किया है। सरकारी निति का एक महत्वपूर्ण उपकरण सुरक्षात्मक भेदभाव की निति को अपनाया जाना है। जिसके अन्तर्गत इन जातियों को विशिष्ठ सुरक्षाएं प्रदान की गयी है। नौकरियों में आरक्षण के आधार पर परिवेश इसी नीति का अंग है।

औद्योगिक संगठन के अन्तर्गत उत्पादन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये प्रौद्योगिकीय एवं मानव संसाधनों के समुचित उपयोग का उत्तरदायित्व प्रबन्ध का हेाता है। उत्पादन के सभी घटकों में प्रबन्ध मात्र एक ऐसा प्रत्यय है जो विभिन्न उद्योंगों की सफलता एवं सार्वजनिक छवि में अन्तर उत्पन्न करता है। पारकर और क्लीमर के अनुसार अधिक उत्पादन और अच्छा प्रबन्ध तभी हो सकता है। जब श्रमिक मिल की सुविधाओं से सन्तुष्ट हो। साथ ही हर्जवर्ग माउटनर स्वाईमैन (1959) प्रभृति लोगों ने अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला है कि श्रमिकों की सन्तुष्टि के लिय रुचिपूर्ण कार्य तथा उत्तरदायित्व आदि को विशेष महत्व है।

टेलर मायो एवं अन्य विद्वानों के अध्ययन प्रबन्ध प्रद्वति में सुधार एवं व्यक्ति के कार्य ग्रहण करने के साधन मात्र से ही सम्बन्धित रहे, परन्तु प्रक्रिया तब तक सुचारु रुप से नहीं चल सकती, जब तक कि श्रमिकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन नहीं किया जाता। चूँकि भारत वर्ष औद्योगिक विकास में प्रयत्नशील है, परन्तु देश में गिरता हुआ उत्पादन बढता हुआ श्रमिक असंतोष उद्योंगों के लक्ष्य प्राप्ति में घातक सिद्ध हुआ है परन्तु बढती हुई परिस्थितियों के फलस्वरुप उद्योगों एवं दृष्टिकोंणों में व्यापक परिवर्तन आया है। **कार्न हाउजर** (1940), **बाटसन** (1939) ने श्रमिको के अर्थिक साधनों द्वारा प्राप्त संतुष्ठि का अध्ययन किया और पाया कि निम्न आय वालों की अपेक्षा अधिक आय वाले श्रमिक अधिक संन्तुष्ट है। हाल ही में अनेक अध्ययन समाज वैज्ञानिकों, प्रबन्ध शास्त्र के विद्वानों इत्यादि ने किये है। उन अध्ययनों से स्पष्ठ ज्ञात हुआ है कि औद्योगिक शांन्ति, औद्योगिक उत्पादकता एवं कार्य सुन्तुष्ठि उन्ही स्थानों पर अधिक होता है। जहॉ पर श्रमिकों को संगठन के प्रबन्ध में सहभागिता के अवसर दिये जाते है। अब संगठन के निजी सम्पत्ति नहीं है । जो निजी लाभ के लिये प्रयत्नशील हो, प्रत्येक संगठन सामाजिक सम्पत्ति है।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

उसके सामाजिक उत्तरदायित्व है। श्रमिक केवल वेतनभोगी कर्मचारी नही बल्कि सम्पूर्ण उत्पादन व्यवस्था का अभिन्न अंग है। **केट्स** और **हेमन** ने भी पाया है कि किसी भी कार्यक्रम में श्रमिकों की भावनाओं को समझा जाता है तो उससे श्रमिक अधिक संतुष्टि व्यक्त करते है।

प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध– श्रमिक प्रबन्धकों के साथ अपने सम्बन्धों को किस प्रकार का महसूस करते है? असके अपनें अनुभव क्या है ? यह जानना इसलिये आवश्यक है कि वास्तविकता के विपरित अनुभव में महसूस किया गया स्वरुप उसके सम्पूर्ण दृष्टि पटल को प्रभावित करता है एवं प्रतिक्रियात्मक व्यवहार स्वरुप को निर्धारित करता है। इसलिय श्रमिकों से प्रबन्धकों के साथ उनके सम्बन्धों के बारे में पूछा गया प्राप्त उत्तरों का विवरण सारणी 1.1 में दिया गया है। सारणी के अनुसार 64.0 प्रतिशत उत्तरदाता सम्बन्धों को अच्छा 24.0 प्रतिशत तनावपूर्ण तथा 12.0 प्रतिशत सामान्य मानते है।

सारणीः 1.1 प्रबन्धकों साथ सम्बन्ध

सम्बन्ध	आवृत्ति	प्रतिशत
अच्छा	64	64.0
तनावपूर्ण	24	24.0
सामान्य	12	12.0
योग	100	100.0

विश्लेषण से ज्ञात होता है कि श्रमिकों के दृष्टिकोण से प्रबन्धकों से उनके सम्बन्ध अच्छे एवं संतोष जनक है। केवल 24.0 प्रतिशत अपने सम्बन्धों को तनावपूर्ण मानते है। इससे यह प्रतीत होता है। कि श्रमिकों एवं प्रबन्धकों दोनो ही औद्योगिक परिपेक्ष की अनिवार्यताओं के अनुरुप अपने को परिवर्तित किया है।

जाति एवं प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध– सामान्य रुप से प्रबन्धकों एवं श्रमिकों के सम्बन्ध में तनाव का एक महत्वपूर्ण कारक जाति को ही माना गया है। जातिगत् पृष्ठभूमि प्रारम्भ से ही कुछ मनोवृत्तियों एवं दृष्टि प्रारुपों को देती है। जो व्यक्ति के व्यवहार को सयोंजित करने के आधार बनते है। वर्तमान अध्ययन में जातिगत पृष्ठभूमि के प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

सारणी 1.2 : जाति एवं प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध

जाति	प्रबन्धको के साथ सम्ध			योग
	अच्छा	तनावपूर्ण	सामान्य	
चमार	32(66.7)	12(25.0)	4(8.3)	48(100.0)
धोबी	9(69.2)	2(15.4)	2(15.4)	13(100.0)
खटिक	9(64.3)	4(28.6)	1(7.1)	14(100.0)
मुसहर	8(61.5)	3(23.1)	2(15.4)	13(100.0)
पासी	6(50.0)	3(25.0)	3(25.0)	12(100.0)
योग	64(64.0)	24(24.0)	12(12.0)	100(100.0)

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि लगभग सभी जाति के अधिकांश श्रमिक ने अपने सम्बन्धों को अच्छी श्रेणी का बतलाया है। लेकिन तुलनात्मक रुप सें इनमें 69.2 प्रतिशत धोबी जाति के श्रमिकों की प्रधानता है। तनावपूर्ण सम्बन्ध बतलाने वालों में सर्वाधिक संख्या 28.6 प्रतिशत खटिक उपजाति के श्रमिकों की है । दूसरे स्थान पर 25.0 प्रतिशत चमार एवं पासी जाति के लोग है। सामान्य स्तर का बतलाने वालों में सर्वाधिक संख्या 25.0 प्रतिशत पासी जाति के लोगों की है। इस प्रकार जातिगत आधार पर सम्बन्ध अच्छे बताये जाते है।

आयु एवं प्रबन्धको के साथ सम्बन्ध—आयु स्तर अनुभव के साथ जुड़ा हुआ है एवं बौद्धिक परिपक्वता का सूचक समझा जाता है। आयु स्तर के परिवर्तन के साथ सम्बन्धों के स्वरुप में भी परिवर्तन आता ळै। इसलिये आयु स्तर का प्रभाव प्रबन्धकों के स्वरुप पर देखा गया है।

सारणी 1.3: आयु एंव प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध

आयु वर्षो में	प्रबन्धको के साथ सम्बन्ध			योग
	अच्छा	तनावपूर्ण	सामान्य	
21—30	10(40.0)	13(52.0)	2(8.0)	25(100.0)
31—40	38(80.9)	6(12.8)	3(6.3)	47(100.0)
41—50	12(60.0)	3(15.0)	5(25.0)	20(100.0)
51—60	4(50.0)	2(25.0)	2(25.0)	8(100.0)
योग	64(64.0)	24(24.0)	12(12.0)	100(100.0)

विश्लेषण से ज्ञात होता है कि लगभग सभी आयु वर्ग के श्रमिक सम्बन्धों अच्छी श्रेणी में रखते है लेकिन इनमें भी सर्वाधिक संख्या 31—40 वर्ष के साथ तथा 41—45 वर्ष के क्रमानुसार 80.9 प्रतिशत तथा 60.0 प्रतिशत श्रमिको की है। तनावपूर्ण सम्बन्ध बतलाने वालों में सर्वाधिक 52.0 प्रतिशत 21—30 वर्ष के युवा श्रमिकों की है। सामान्य सम्बन्ध बताने वालों में 25.0 प्रतिशत सर्वाधिक संख्या 41—50 एवं 51—60 वर्ष के श्रमिकों की है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि युवा आयु के सम्बन्धो में उत्पन्न तनाव आयु के बढनें के साथ कम होते चले जाते है।

शिक्षा एंव प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध :— शिक्षा स्तर सम्बन्धाके के स्वरुप को प्रभावित करता है। शिक्षा स्तर के बढनें के साथ सम्बन्धों के नये आयाम विकसित होते है। अध्ययन किये गये श्रमिको के शिक्षा स्तर प्रबन्धको के साथ उनके सम्बन्धों पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

सारणी 1.4 : शिक्षा एवं प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध

,शिक्षा	प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध			
	अच्छा	तनावपूर्ण	सामान्य	योग
मिडिल	34(70.8)	12(25.0)	2(4.2)	48(100.0)
हाईस्कूल	8(57.1)	2(14.3)	4(28.6)	14(100.0)
इण्टर	7(46.7)	5(33.0)	3(20.0)	15(100.0)
बी0ए0	6(60.0)	3(30.0)	1(10.0)	10(100.0)
हाईस्कूल, ITI	9(69.2)	2(15.4)	2(15.4)	13(100.0)
योग	64(64.0)	24(24.0ा	12(12.0)	100(100.0)

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

सारणी के अवलोकन से पता चलता है कि सभी शिक्षा स्तर के श्रमिकों ने सम्बन्धों को अच्छे स्तर का बाताया है कम शिक्षा स्तर सर्वाधिक 70.8 प्रतिशत श्रमिको ने सम्बन्धों को अच्छा बताया है । इण्टर तक शिक्षित अधिकांश 33.3 प्रतिशत श्रमिकों ने सम्बन्धों को तनावपूर्ण बताया है। सामान्य सम्बन्ध बताने वालो में सर्वाधिक संख्या हाईस्कूल 28.6 प्रतिशत तथा इण्टर 20.0 प्रतिशत श्रमिको की है। शिक्षा स्तर बढ़ने के साथ सम्बन्ध के स्वरुप में कुछ परिवर्तन अवश्य आता है।

तथ्यों के विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुये वे निम्नलिखित है।

1. प्रस्तुत शोध में श्रमिकों के प्रबन्धकों के साथ सम्बन्ध एवं सहभागिता के प्रति दृष्टिकोणों का प्रमुख रुप से विश्लेषण किया गया है। श्रमिकों के दृष्टिाकोण से प्रबन्धकों से उनके सम्बन्ध अच्छे एवं संतोषजनक है। कुछ श्रमिक ही अपने सम्बन्धों को तनाव पूर्ण मानते है।
2. जातिगत आधार पर श्रमिकों एवं प्रबन्धकों के सम्बन्धों के बारे में पाया गया कि लगभग सभी जातियों के श्रमिकों ने अपने सम्बन्धों को अच्छा बतलाया है। तुलनात्मक रुप से देखा गया तो धोबी अच्छे, खटिक तनावपूर्ण एवं पासी सामान्य व्यवहार महसूस करते है।
3. शिक्षा एवं आयु कें आधार पर प्रबन्धकों एवं श्रमिकों के सम्बन्धों के बारे में पाया गया कि सभी आयु समूह के लोगों ने अपने सम्बन्धों को अच्छा बतलाया ओर कम शिक्षा स्तर प्राप्त अधिकांश 70.8 प्रतिशत ने सम्बन्धों को अच्छा बताया है।

प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार यह कहा जा सकता है कि श्रमिकों एवं प्रबन्धकों दोनों ही औद्योगिक परिवेश की अनिवार्यताओं के अनुरुप अपने को परिवर्तित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- Willard E.Parkar and Robert , W.Kleemeir, Relations & Supervision: Leadrrship in management & Newyour: Mc. Graw. Hill(1951) P10

2- Elaton Mayo and his associates : social organization in an Industrial plant : COmbridge University Presss 1939

3- Nandu Ram: The mobile scheduled castes , Rise of a new midddle class, Hindustan Publishing corporation Delhi 1988.

4- Mayer's charles A: Industrial Relatives in India Asia Publishing House, Bombey 1970.

5- Miller Delberte and Willium H.form : Industrial sociology, work in orgnization life, Harper & Roue Publishing Newyok.

6- Epestein T.S. Economic Development and social change in South India, Oxford Univer sity press Bombay 1962.

*****